

(iii) अलुक् नत्पुरुष समास—

जिस समास में प्रथम पद के साथ विभक्ति चिह्न किसी न किसी रूप में उपस्थित रहता है, अर्थात् प्रथम पद संस्कृत की विभक्ति के रूपों की तरह प्रयोग किया जाता है, अलुक् नत्पुरुष समास कहलाता है -

जैसे- वसुंधरा - वसुओं को धारण करने वाली धरा
 भयंकर - भय को पैदा करने वाला

- मृत्युंजय - मृत्यु को जीतने वाला
 शुभंकर - शुभ को करने वाला
 युधिष्ठिर - युद्ध में स्थिर रहने वाला
 थानेदार - थाने का दार (मालिक)
 पहरेदार - पहरे का दार (मालिक)
 खेचर - ख (आकाश) में विचरण करने वाले

④ भुक्त कारक चिह्न नत्पुरुष समास -

इस समास में कर्म कारक से लेकर अधिकरण कारक तक के विभक्ति चिह्न भुक्त हो जाते हैं, इसलिए इसे भुक्त कारक चिह्न नत्पुरुष समास कहते हैं -

जैसे - अकाल से पीड़ित - अकाल को आगत

कारक

कर्म

करण

सम्प्रदान

अपादान

सम्बन्ध

अधिकरण

कारक चिह्न

को

से/के द्वारा (जुड़ने हेतु)

के लिए

से (अलग होने हेतु)

का, की, के

में, पर

(i) कर्म तत्पुरुष समास- 'को'

इस समास में दोनों पदों के बीच प्रयुक्त विभक्ति चिह्न 'को' का भोप हो जाता है, जो कर्मकारक का रूप होता है, इसलिए इसे 'कर्म तत्पुरुष' समास कहते हैं।

जैसे- मनोहर- मन को हरने वाला।
 चित्तचोर- चित्त को चुराने वाला।

मरणालुर - मरने को आलुर,

मुँहलोड़ - मुँह को लोड़ने वाला,
दिललोड़ - दिल को लोड़ने वाला

सर्वज्ञ - सब को जानने वाला,
जेबकुतरा - जेब को कतरने वाला

जिनेन्द्रिय - इन्द्रियों को जीतने वाला,
व्यक्तिगत - व्यक्ति को गत

विकासोन्मुख - विकास को उन्मुख

(ii) कृण ल्पुरुष समास - 'से/के द्वारा'

इस समास में दोनों पदों के बीच प्रयुक्त विभक्ति चिह्न 'से/के द्वारा' भुक्त हो जाता है,

इसलिए इसे 'कृण ल्पुरुष' समास कहते हैं -

जैसे - दयार्द्र - दया से आर्द्र

अकासपीडित - अकास से पीडित

रोगपीडित- रोग से पीडित,

तुलसीरचित- तुलसी के द्वारा रचित

मदंघ- मद से अंधा,

मोहंघ- मोह से अंधा

अश्रुपूर्ण- अश्रु से पूर्ण

ईश्वरप्रदत्त- ईश्वर के द्वारा प्रदत्त